(1)

भूमंडलीकरण

अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के लिए हिन्दी में 'भूमंडलीकरण' शब्द प्रचलित है। इसके लिए 'वैश्वीकरण' शब्द भी प्रयुक्त होता है। यह शब्द बीसवीं सदी के अंतिम दशक में व्यापक रूप में प्रयोग में आया। 1991 में सोवियतसंघ के विघटन के बाद जब दुनिया एक ध्रुवीय हो गयी और अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दुनिया के बाजार पर कब्जा शुरू कर दिया तो इसे भूमंडलीकरण जैसा आकर्षक नाम दिया गया।

भूमंडलीकरण का आशय विभिन्न देशों के बाजारों एवं उनमें बेची जाने वाली वस्तुओं में एकीकरण से है जिसमें विदेशी व्यापार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, उन्नत प्रौद्योगिकी की निकटता आदि के कारण विश्व व्यापार को बढ़ावा मिलता है। भूमंडलीकरण से सम्पूर्ण विश्व में परस्पर सहयोग एवं समन्वय से एक बाजार के रूप में कार्य करने की शक्ति को प्रोत्साहन मिलता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं को एक देश से दूसरे देश में आने एवं जाने के अवरोधों को समाप्त कर दिया जाता है। इसी प्रकार से सम्पूर्ण विश्व में बाजार शक्तियाँ स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगती हैं। भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप विश्व के सभी देशों में वस्तुओं की कीमत लगभग समान होती है। सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था में सभी व्यापारिक क्रियाओं का अंतर्राष्ट्रीकरण ही भूमंडलीकरण के स्वरूप का निर्धारण करता है।

• **भूमंडलीकरण की आवश्यकता :-**

भूमंडलीकरण के माध्यम से विश्व की अर्थव्यवस्था को एकीकृत करके स्वतंत्र एवं मुक्त व्यापार नीति को अपनाना है। सम्पूर्ण देशों को एक आर्थिक अर्थतंत्र के माध्यम से जोड़ना भूमंडलीकरण का प्रमुख

उद्देश्य है। भूमण्डलीकरण के द्वारा विश्व व्यापार का तीव्र गति से विस्तार होता है। इसके माध्यम से विभिन्न देशों के बीच की अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन, उपभोक्ता की अभिरुचि, जीवन शैली और मांग में बदलाव लाया जा सकता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से बाजार में आंतरिक एवं बाह्य प्रतिस्पर्धा की तेजी से बढ़ाने के लिए एक से अधिक देशों की अर्थव्यवस्था को एक स्वतंत्र व्यापार की संबंधता से जोड़ना रहा है। भूमंडलीकरण का सबसे प्रमुख उद्देश्य यह रहा है कि विश्व की अर्थव्यवस्था पद्धति में एक ऐसी प्रक्रिया को अपनाया जाय जिससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को सुनियोजित तरीके से स्वतंत्र व्यापार संतुलन बनाया जा सके। विश्व के सभी देश एक मुक्त व्यापार संगठन की प्रक्रिया में भाग ले सकें।

• **भूमंडलीकरण का महत्व :-**

भूमंडलीकरण के कारण विगत 50 वर्षों के दौरान तकनीकी ज्ञान का काफी तीव्र गति से विकास हुआ है। इस तकनीकी ज्ञान के द्वारा परिवहन, प्रौद्योगिकी से अब दूर देशों तक वस्तुओं को कम लागत में पहुँचाना संभव हो गया है। सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को एक सुनिश्चित योजना से स्पष्ट एवं सरल बना दिया है। संचार सूचनाओं में जैसे- कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, फोन, फैक्स आदि के द्वारा एक-दूसरे की सम्बद्धता को काफी सरल बना दिया है। भूमंडलीकरण के द्वारा सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी विकास ने विश्व व्यवस्था को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को आज विश्व के प्रायः सभी देशों के द्वारा अपनाया जा रहा है। आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाये बिना कोई भी देश वैश्वीकरण से नहीं जुड़ सकता। उदारीकरण का

③

अर्थ है विदेशी पूँजी को पूर्ण उदारता के साथ अपने देश में निवेश की अनुमति प्रदान करना। भारत ने 1991-92 ई में आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाया। 1990 ई के दशक में ही भारत सहित कई विकासशील राष्ट्रों ने उदारीकरण की नीति को अपनाकर भूमंडलीकरण को बढ़ावा दिया है। उदारीकरण से विकसित एवं विकासशील देशों के बीच एक स्वतंत्र एवं बाधारहित मुक्त विश्व व्यापार बाजार व्यवस्था में सुधार सम्भव हुआ है।

विश्व के सभी देशों को एक-दूसरे से जोड़ने में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विशेष योगदान है क्योंकि ये कम्पनियाँ सुविधा के अनुसार किसी भी देश में स्थापित कर दी जाती हैं। विश्व के देशों में जहाँ पर सस्ता श्रम एवं स्थापित करने के अन्य सस्ते साधन उपलब्ध होते हैं वहाँ ये स्थापित कर दी जाती हैं जिससे लागत में कमी आती है। इसके साथ ही प्रतियोगिता का कम सामना करना पड़ता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वस्तुओं, सेवाओं एवं सूचनाओं को विश्व स्तर पर उपलब्ध कराती हैं। उदाहरण के लिए एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी अमेरिका के अनुसंधान केन्द्र में अपने उत्पादों का डिजाईन एवं आकार तैयार करती है लेकिन श्रम सस्ता होने के कारण चीन में पुर्जों को तैयार किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अलग-अलग वस्तु का उत्पादन एवं निर्माण करती हैं जिससे कि वस्तु की उत्पादन लागत में कमी आती है। इन कंपनियों के द्वारा विभिन्न वस्तु के उत्पादन से अधिकतम लाभ प्राप्त किया जाता है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विस्तार ने भी भूमंडलीकरण को बढ़ावा दिया है। विदेशी व्यापार के विस्तार से भूमंडलीकरण की प्रक्रिया नियंत्रित हुई है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद लगभग सभी देशों के विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही प्रत्येक देश के उत्पादकों को प्रतियोगिता में समान अवसर मिला है।

(4)

• **भूमंडलीकरण का प्रभाव :-**

भूमंडलीकरण के कारण मनुष्य की जीवन पद्धति, गुणवत्ता, रहन-सहन एवं जीवन स्तर पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। विश्व व्यापार संगठन के द्वारा प्रतियोगिता बाजार को बढ़ावा मिला है। इसके साथ ही रोजगार के अवसरों में भी कमी आई है। औद्योगीकरण के द्वारा आधुनिक मशीनों का स्वचालित उपयोग एवं सूचना प्रौद्योगिकी विस्तार के तीव्रगामी होने के कारण मानवीय शक्ति श्रम की गुणवत्ता में कमी आई है। भूमंडलीकरण ने रोजगार को सर्वाधिक प्रभावित किया है, क्योंकि श्रमिकों को जहाँ पर अच्छा रोजगार मिलता है, वहीं पर काम करने चले जाते हैं।

भूमंडलीकरण का कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। भारत में 90 प्रतिशत कृषक छोटे एवं सीमान्त कृषि के अन्तर्गत आते हैं। कृषकों के पास सीमित पूँजी एवं आय कम आदि होने के कारण यह कृषक कृषि आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं को कम मात्रा में उपयोग कर पाते हैं। हरितक्रांति के परिणामस्वरूप जिन कृषकों के पास पूँजी थी, उन कृषकों को सबसे अधिक लाभ मिला। लेकिन सीमान्त कृषकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। भूमंडलीकरण के कारण कृषि उत्पादकता पर भी काफी विपरीत प्रभाव पड़ा है। जैविक खादों का महँगा होना, कीटनाशक दवाईयों का महँगा होना, कृषि शोध में बाधा, जैविक विविधता में बाधा आदि के कारण कृषि की उत्पादकता एवं कृषि पद्धति काफी प्रभावित हुई है।

भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप पर्यावरण का अवनयन एवं उसकी गुणवत्ता में परिवर्तन हुआ है। तीव्रगामी औद्योगीकरण के कारण पर्यावरणीय प्रदूषण, मिट्टी का अम्लीय या क्षारीय हो जाना, अल्पवृष्टि, अतिवृष्टि, सूखा, बाढ़ आदि पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म हुआ है। मानवीय क्रियाकलापों एवं

पर्यावरणीय प्रभावों से प्रकृति काफी प्रभावित हुई है। औद्योगीकरण में नई वैज्ञानिक तकनीकी के उपयोग की प्रक्रिया से प्रत्येक उद्योग अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहता है जिससे इस उत्पादन में कम लागत, कम श्रम, कम मूल्य वहन करना पड़े जिससे उद्योग को लाभ हो। उद्योगों के स्थानीकरण से उनके अवशिष्ट पदार्थ, धुएँ से प्रदूषण, शोर प्रदूषण, आदि से पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ावा मिलता है जो भूमण्डलीकरण की देन है।

भूमण्डलीकरण से सर्वाधिक लाभ विकसित देशों को मिला है। विकसित देशों के पास पर्याप्त मात्रा में पूँजी का होना एवं सूचना प्रौद्योगिकी में आगे होने के कारण इन देशों की उदारीकरण की प्रक्रिया को सर्वाधिक प्रोत्साहन मिला है। विश्व व्यापार संगठन के द्वारा एक मुक्त व्यापार की अर्थव्यवस्था को लाभ तो मिला है लेकिन कुछ देश इस व्यापार नीति से संतुष्ट नहीं थे। व्यापार तंत्र के आठवें सेवा व्यापार समझौता के द्वारा मालूम हुआ कि विश्व व्यापार संगठन से विकसित देशों को सर्वाधिक लाभ प्राप्त हो रहा है और उनको सर्वाधिक बढ़ावा मिल रहा है।

भूमण्डलीकरण से ग्लोबल वार्मिंग की समस्या सामने आई है। ग्लोबल वार्मिंग का संबंध एक देश से नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व से है। विकसित देशों द्वारा विलासिता की सुविधाओं का अत्यधिक उपयोग किया गया। भारी मात्रा में वातानुकूलित गैसों का उपयोग एवं मोटर वाहनों द्वारा वायु प्रदूषण आदि के द्वारा अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन परत में छिद्र के होने से एक नई समस्या का जन्म हुआ है जिससे वहाँ की बर्फ पिघलकर समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, तापमान में वृद्धि आदि समस्याओं ने विश्व के भविष्य को खतरे में डाल दिया है।